ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-1* Issue-10* November-2016
Innovation The Research Concept

बौद्ध साहित्य में वर्णित गणिकाएँ

शैलेन्द्र कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
एम0डी0पी0जी0 कालेज, प्रतापगढ़

सारांश

भगवान बुद्ध के आविर्भाव–काल में तथा तदन्तर भारत में नगर सभ्यता का पूर्वापेक्षा विशेष विकास हुआ। महापरिनिब्बाण–सुत्त में उल्लिखित 6 प्रमुख महानगर–चम्पा, राजगृह, साकेत, श्रावस्ती, कौषाम्बी और वाराणसी, तथा वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, उज्जैनी प्रभृति वैभवशाली नगरों को उस युग के व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था। पाटलिपुत्र ग्राम को अजातशत्रु के राजत्वकाल में महत्व दिया गया और वही से इसका विकास क्रमशः होने लगा और इसने शीघ्र ही मगध–साम्राज्य की राजधानी के पद को प्राप्त कर महानगरों में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। इन समृद्ध नगरों के विलासप्रिय नागरिकों को आमोद–प्रमोद की वे सभी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध थीं जो ग्रामीण जीवन में दुर्लभ मानी जाती हैं। नागरिक जन अनेकानेक प्रकार के आनन्दोपभोगों में लिप्त रहा करते थे। उनके विलासमय जीवन में गणिकाओं ने चार चाँद लगा दिये थे। नगरवासी अपने नगर की गणिका के सौंदर्य पर गर्व का अनुभव करते थे। गणिका के अभाव को किसी भी प्रमुख नगर के जीवन की महती त्रुटि समझी जाती थी, तभी तो राजगृह के नागरिकों ने वैशाली का अनुसरण कर अपने नगर के लिए भी गणिका की व्यवस्था की । राजगृह के एक प्रमुख श्रेष्ठि ने वैशाली नगरी का अवलोकन किया। उसने वहाँ के नागरिकों को सभी प्रकार से समृद्ध एवं संतुष्ट पाया। राजगृह वापस आने पर उसने मगधराज श्रेणिय बिम्बिसार के पास जाकर निवेदन किया– 'महाराज, वैशाली नगरी समृद्ध एवं ऐष्वर्य सम्पन्न है...वहाँ अम्बपाली नाम की गणिका का वास है जो परम संदरी, रमणीया, नयनाभिरामा, परम सुंदर–वर्णा, गायन–वादन–नृत्य विशारदा तथा अभिलाशीजन–बहुदर्शनीया है। महाराज प्रसन्न हों, हम भी एक गणिका का अभिषेक करें।[1] उस समय राजगृह नगर में सालवती नाम की एक नवयुवती थी जो परम सुंदरी, रमणीया, दर्शनीया तथा परम सुदर वर्णा थी। उसे ही गणिका पद के उपयुक्त पाकर उसका गणिकाभिषेक सम्पन्न किया गया।[2] जिस प्रकार सालवती को गणिका पद पर प्रतिष्ठित किया गया, उससे प्रतिभासित होता है कि गणिका पद को प्राप्त करना किसी नारी के लिए समाज में अप्रतिष्ठिा सूचक नहीं माना जाता था। इस पद पर प्रतिष्ठित हो संभवतः नारी भी उन दिनों अपने को गौरवान्वित अनुभव करती थी। समाज में अम्बपाली और सालवती का स्थान सामान्य गणिका से सर्वथा भिन्न था, क्योंकि वे राजगणिका–पद को सुशोभित करती थी और वस्तुतः वे अभिजातकुल भोग्या बनी रही ।

मुख्य शब्द : वैशाली, विनय–पिटक, राजगणिकाएँ, महापरिनिब्बाण–सुत्त।

प्रस्तावना

विनय–पिटक में उपलब्ध प्रमाणों से विदित होता है कि तत्कालीन समाज में गणिकाओं को समुचित सम्मान मिला। वे अभिजात वर्ग की सौंदर्योपभोगलिप्सा की तुष्टि का साधन मात्र न थीं, उन्होंने गायनवादन–नृत्य कला का यथोचित संरक्षण भी किया। गणिकाओं के माध्यम से जन–मानस का सौंदर्यानुराग प्रबुद्ध एवं परितुष्ट होता था। वे महोत्सवों पर राजप्रसाद में लोक रंजनार्थ संगीत नृत्य के हृदयग्राही प्रदर्शन करती थी। भगवान् बुद्ध द्वारा अम्बपाली का आतिथ्य स्वीकार करने तथा उसके द्वारा अम्बपाली बन का भिक्षु–संघ को दान करने की घटनाओं से प्रतीत होता है कि तत्कालीन समाज ने गणिकाओं को हेय दृष्टि से नहीं

देखा।[3] भगवान् बुद्ध के दर्षनार्थ अम्बपाली ने अनेक सुशोभित रथों को लेकर जिस ठाटबाट से कोटिग्राम के लिए प्रस्थान किया उससे ऐसा प्रतिभासित होता है कि उसका रहन–सहन राजसी था।[4] गणिका की कोख से जन्मे व्यक्ति का समाज में तिरस्कार भी नहीं किया गया। यदि गणिकापुत्र प्रतिभासंपन्न होता तो उसे अपनी योग्यता के अनुरूप उच्चपद को प्राप्त करने में बाधा नहीं पड़ती थी। इसका सबल प्रमाण तो यही है कि प्रख्यात राजवैद्य जीवक का जन्म राजगृह की गणिका सालवती के गर्भ से हुआ था।[5]

जातक कथाओं में अनेक गणिकाओं के वर्णन से प्रतीत होता है कि उनको अपने व्यवसाय से इतनी आय हो जाती थी कि वे विलासमय जीवन व्यतीत करने के सभी साधन जुटाने में समर्थ थीं। सामा,[6] सुलसा[7], काली[8] आदि गणिकाएँ प्रतिरात्रि एक सहस्र कार्षापण अर्जित कर लेती थीं। वस्त्र, अंगराग तथा माला में ही काली का दैनिक व्यय पाँच सौ कार्षापण तक पहुँच जाता था।[9] जो रसिक उसके पास रात्रि व्यतीत करने जाता उसे अपने वस्त्र उतार कर गणिका द्वारा प्रदत्त परिधान धारण करना पड़ता। ग्राहकों द्वारा किसी गणिका को प्रतिरात्रि सहस्र कार्षापण देने के कथन में अतिशयोक्ति अवश्य है। वस्तुतः राजगणिका की दैनिक आय पचास से सौ कार्षापण के बीच थी जो विलासमय जीवन व्यतीत करने के लिए पर्याप्त कहा जा सकता है। सालवती को प्रतिरात्रि सौ कार्षापण प्राप्त होते थे।[10] पर अम्बपाली को केवल पचास।[11] इसका कारण राजगृह एवं वैशाली के जीवन स्तर का वैषम्य प्रतीत होता है। मगध–साम्राज्य की राजधानी में विलासिता की वस्तुओं के लिए अधिक धन व्यय करने में सक्षम नागरिकों को संख्या अन्य नगरों से अपेक्षाकृत अधिक रही होगी ।

सामान्य नारी के समान गणिका के आचरण में भी महानता एवं क्षुद्रता के गुणावगुणों का होना स्वाभाविक है। जातक कथाओं में सद्गुणसम्पन्न तथा दुराचारिणी दोनों प्रकार की गणिकाओं के उदाहरण मिलते है। काली नाम की गणिका में प्रबल आत्म–सम्मान का भाव तो था ही, साथ ही उसमें सामाजिक मान्यताओं के निर्वाह की अपूर्व क्षमता भी थी। उसका तुण्डिल नामक भाई बड़ा दुश्चरित्र, शराबी तथा जुआड़ी था और उसके धन का दुरूपयोग किया करता था। उसने अपने भाई के सुधार करने का प्रयत्न किया, पर व्यर्थ। एक दिन तुण्डिल को लोगों ने खूब पीटा और उसके वस्त्र भी छीन लिये। जब वह अपनी बहन के पास चिथड़ों में लिपटा हुआ पहुँचा तो उसने अपनी दासियों द्वारा उसे भगा दिया।[12] एक अन्य गणिका एक नवयुवक पर अनुरक्त हो गयी। वह नवयुवक उसे एक सहस्र कार्षापण देकर कहीं चला गया, तो वह गणिका तीन वर्षो तक उसकी प्रतीक्षा करती रही। वह निर्धन हो गयी, पर उसने किसी अन्य पुरूष से ताम्बुल तक स्वीकार नहीं किया।[13] सुलसा नाम की गणिका का वर्णन एक अति बुद्धिमती तथा साहसी नारी के रूप में मिलता है। वह एक दस्यु पर आसक्त हो गयी। उसने उसकी प्राणरक्षा की और अन्य पुरूषों के संपर्क में आना बन्द कर दिया, परन्तु वह दस्यु धूर्त निकला। उसके मन में पाप हो गया। उसने अपनी प्रेमिका की हत्या कर उसके मूल्यवान् आभूषणों को हस्तगत करने का निश्चय किया और इस दुराकांक्षा की पूर्ति के विचार से एक दिन वह सुलसा को सुन्दर वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर एक पर्वत शिखर पर ले गया। सुलसा ने परिस्थिति की गम्भीरता भाँपकर उस दस्यु से प्राणदान के लिए बड़ी विनती की पर उस कूर का हृदय नहीं पिघला । इस विकट स्थिति में भी उसने अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं खोया, और उसने उस दस्यु के आलिंगन के स्वांग की ओट में उसे पर्वत शिखर के नीचे ढकेल दिया जिससे वह टुकड़े–टुकड़े हो गया।[14] इन कहानियों से विदित होता है कि गणिकाओं में भी कोमल भावनामयी नारी का हृदय होता है, मानापमान तथा आत्मसम्मान की भावनाएँ रहती हैं और उनमें भी साहस का अभाव नहीं होता।

गणिका के आचरण के दूसरे पक्ष के वर्णन भी जातकों में उपलब्ध हैं। जिस प्रकार कतिपय गणिकाएँ थीं, उसी प्रकार कई गणिकाएँ अविश्वसनीय तथा क्षूद्र विचारशीला थी। एक श्रेष्ठिकुमार अपनी प्रेमिका गणिका को प्रति रात्रि सहस्र कार्षापण दिया करता, परन्तु एक रात वह विलम्ब से खाली हाथ पहुँचा तो उस गणिका ने उससे कहा– 'आर्य, मैं गणिका हूँ, बिना सहस्र कार्षापण लिये किसी की अंकशायिनी नहीं बन सकती, अतः जब आपके पास एक सहस्र कार्षापण हों तो मेरे निकट आवें। श्रेष्ठिपुत्र ने बड़ा अनुनय किया, पर व्यर्थ। उस गणिका ने अपनी दासियों को उसे बलपूर्वक निकाल देने का आदेश दिया। इस अप्रत्याशित व्यवहार का उस श्रेष्ठिकुमार के हृदय पर इतना कठोर आघात हुआ कि वह संसार त्याग कर सन्यासी हो गया।[15] सामा नाम की गणिका ने एक दस्यु को देखा तो उस पर वह आसक्त हो गयी। उस दस्यु को राजपुरूष बाँधकर ले जा रहे थे । उसे प्राप्त करने का कोई अन्य उपाय न देख उसने उस दस्यु के बदले में उस नवयुवक को बन्दी बना दिया जो उसे प्रतिदिन सहस्र कार्षापण दिया करता था।[16] उसके इस विश्वासघात के कारण दस्यु तो बच गया, पर बदले में जान गयी उस निर्दोष नवयुवक की । इससे अधम कर्म और क्या हो सकता है?

निष्कर्ष

जातक कथाओं में प्रायः उन गण्किाओं का वर्णन मिलता है जो समृद्ध थीं। अम्बपाली तथा सालवती राजगणिकाएँ थीं और वे सुशोभित करती थीं– राजधानियों को। समाज में उनको धन, आदर और यश मिले। परन्तु क्या यही बात एक सामान्य गणिका के विषय में कही जा सकती है? प्रायः समाज चाँदी सोने के थोड़े से टुकड़ों के बदले शरीर विक्रय के कर्म को हेय दृष्टि से देखता था। इसे नीच कर्म की संज्ञा दी गयी।[17] नीचघर अथवा गणिकाघर[18] और दुरत्थि–कुम्भदासी[19] सदृश शब्दों से यही अर्थ प्रतिभासित होता है कि वेश्या कर्म को समाज में सम्मान का स्थान कदापि नहीं दिया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महावग्ग, 8/1/2*
2. *वही, 8/1/3*
3. *वही, 6/30/2, 6/30/5*
4. *वही, 6/30/1*
5. *वही, 8/1/4*
6. *कणेवेर–जातक, (318)*
7. *सुलसा–जातक, (419)*
8. *तक्कारिय जातक, (481)*
9. *जातक, 4, पृ0 249*
10. *महावग्ग, 8/1/3*
11. *वही, 8/1/1*
12. *जातक, 4, पृ0 248–49*
13. *जातक, 2 पृ0 380*
14. *जातक, 3 पृ0 435–38 (सुलसा–जातक)*
15. *जातक, 3, पृ0 475–76*
16. *जातक, 3, पृ0 59–60*
17. *जातक, 3, पृ0 60*